द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

‘‘परन्□तु हमारे पास यह धन मट्टिी केबर्तनों में रखा है कियह असीम सामर्थ्□य हमारी ओर से नहीं वरन् परमेश्□वर ही की ओर से ठहरे□ ’’ 2कुरन्थियिों 4:7

पौलुस हमें स्□मरण दलिाता है हमारे मसीही अस्तत्ि□व को –

मसीही होने केनाते हमारे पास □क खज़ाना है□ संदर्भ केपद 7 में इसका प्रमाण है□ पद 6 में यह स्□पष्□ट है कियह खज़ाना क्□या है? यह खज़ाना परमेश्□वर की महमिा केप्रकाशन का प्रकाश है, जो हम प्रभु यीशु मसीह केचेहरे में देख सकते हैं□ परमेश्□वर की महमिा की ज्□योत िप्रभु यीशु मसीह केचेहरे से प्रकट होती है□ प्रभु यीशु मसीह का चेहरा बताता है किपरमेश्□वर ने मनुष्□य केलि□ अपने प्रेमपूर्ण उद्देश्□य की पूर्त,ि प्रभु यीशु मसीह केजन्□म, मृत्□यु और पुनरूत्□थान द्वारा की है□ जो खज़ाना है, वह उद्धार का खज़ाना है□ उद्धार केसुसमाचार का खज़ाना है□ वह खज़ाना जो हममें है और हमारे द्वारा सक्रयि है□ हम धनी हैं, क्□योंकिउद्धार का सुसमाचार हममें उपलब्□ध है□

यह खज़ाना हममें कोई अहंकार उत्□पन्□न नहीं करता क्□योंकिउसका स्□त्रोत परमेश्□वर है□ पद 6 केअनुसार ‘‘परमेश्□वर ही है, जसिने कहा, किअंधकार में से ज्□योत िचमकेऔर वही हमारे हृदयों में चमका ’’

तथा पद 7 में लखिा है

–

“यह असीम सामर्थ्□य हमारी ओर से नहीं वरन् परमेश्□वर ही की ओर से ठहरे□ ” इसलआि□ खज़ाना हमें तो दयिा गया है परन्□तु हमारे द्वारा अर्जति नहीं है□ –यह □हसास भी हमें सुसमाचार केखज़ाने से होता है□

दूसरी बात हमें यह याद रखना है कियह असीम धन मट्टिी केपात्रों में रखा है – और वह मट्टिी केपात्र हम हैं□

जीवन की कठोर वास्□तवकिता की हम अवहेलना कर नहीं सकते□ हम मट्टिी के पात्र हैं, कल टूट जा□ंगे, बखिर जा□ंगे, छनि्□न —भनि्□न हो जा□ंगे□ हमारा वशि्□वास, हमारे शरीर को अनश्□वर नहीं बना□गा, बदल ज़रूर देगा□ मानवीय अस्तति्□व की वास्□तवकिता नश्□वरता से हम बच नहीं सकते, अस्तति्□व को परविर्तति अवश्□य कर सकते हैं□

जीवन के क्□लेशों से भी बच नहीं सकते कनि्□तु ईश्□वर का अनुग्रह उपलब्□ध रहता है□ पद 8 और 9 में लखिा है

—

“

हम चारों ओर से क्□लेश तो भोगते हैं पर संकट में नहीं पड़ते; नरिूपाय तो हैं पर नाश नहीं होते□ सता□ तो जाते हैं, पर त्□यागे नहीं जाते, गरिाये तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते□

,,

जब हम विश्वास करते हैं तो परमेश्वर यह नहीं कहता कि अब तुम पीड़ा से मुक्त हो, दुखों से स्वतंत्र हो। परमेश्वर यह नहीं कहता कि व्यथा और वेदनाएं जीवन में आयेंगी नहीं, वह सिर्फ यह कहता है कि ये पीड़ाएं हमको चकनाचूर करने में समर्थ नहीं होंगी।

मसीही जीवन में उजले पक्ष भी होंगे और अंधेरे भी — परन्तु अंधेरे पक्षों में जीने का साहस परमेश्वर हमको देता है — हमारा उद्धार अनश्वरता में नहीं है, इसी नश्वर जीवन के नये हो जाने में है।

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

जीवन की ये जो सीमा□ं हैं, ये हमें पंगु नहीं बनातीं, स्□ वस्□ थ्□ य करती है□ हमें बांध नहीं देतीं, हमें उड़ान के पंख देती है□ जब हमें नश्□ वरता का, अपनी मानवता का, □ हसास होता है तब ईश्□ वरता पर हमारी नर्िभरता बढ़ती जाती है□ जो धन है वह यह मट्टिी का बर्तन नहीं है, धन हमें ईश्□ वर से प्राप्□ त होता है, जो हम मट्टिी के पात्रों में रखा जाता है□ सामर्थ्□ य, मट्टिी के पात्रों की नहीं है□ पद 7 हमें बताता है कि यह असीम सामर्थ्□ य हमारी ओर से नहीं□

पौलुस से अधकिइस मट्टिी की सीमाओं का और नर्बिलताओं का हसास और कसिे होगा? पौलुस की शारीरकि नर्बिलता सब पर जाहरि थीं मसीहयित का यहूदीकरण करने वाले लोग पौलुस केवरिोधी थे और पौलुस की शारीरकिनर्बिलता को संभवत: वे लोग ईश्वर केकोप का परणािम समझते थे

द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

2कुरन्थियों 10:10 में लखिा है –
“

उसकी पत्रयिां तो गंभीर और प्रभावशाली हैं परन्□तु जब देखते हैं तो वह देह का नर्िबल और वक्□तव्□य में हल्□का जान पड़ता है□
”

His bodily presence is weak and his speech is of no account.

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

स्□ पष्□ ट है कि वह शारीरकि रूप से नर्बिल था□ इसके साथ

—

साथ उसे कोई शारीरकि व्□ याधि थी जो उसे बार

—

बार पीड़ति करती थी□

2कुरन्थियों 12:7 में पौलुस लखिता है

—

“

मेरे शरीर में □ क कांटा चुभाया गया अर्थात् शैतान का □ क दूत कि मुझे घूंसे मारे□
”

A thorn in the flesh.

“शरीर में कांटा” जो था बना रहा, कायम रहा —

द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

यद्यपउिसने गड़िगड़िाकर
प्रार्थना की कविह हटा लयिा
जा□ □ जसिकेशरीर में ऐसी
व्□ याधहिो और नरि्बलता हो जो
कायम रहे, उसे इस देह केमटि्टी
केपात्र होने क□ हसास कतिना
गहरा होगा□ इसीला□ अक्□ सर
बीमारी □कशारीरकिपीड़ा तो होती
है कनि्□ तु □कआत्मकिअनुभव
भी होती है, जो हमें मृत्□ यु की

अपरहिार्यता का बोध कराती है

–

इस देह के मट्टिी होने का □हसास कराती है□

2कुरन्थियों 11:24–27 में वर्णन है, उन आघातों का जो पौलुस ने सहे थे और जो उसकी

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

शारीरकि नरि्बलता क□ क कारण अवश्□ य रहे होंगे□ मसीह की सेवा में उसने सीमा से अधकि परशि्रम कयिा

—

बार

—

बार वह जेल में रहा,

बार

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

—

बार कोड़े खा□ ,

पांच बार 39

—

39 कोड़ों की सज़ा उसने सही□

तीन बार उसे बेंतें मारी गई□

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

□ कबार उसे पत्□ थरवाह कयिा गया□ पत्□ थरवाह केपश्□ चात् उसे मरा हुआ जानकर छोड़ दयिा गया था□ फरि जनि खतरों में वह जीता है उसके नरिन्□ तर तनाव का

कुप्रभाव उसके शरीर पर अवश्□ य पड़ा होगा□ यात्राओं के खतरों में, नदियों के खतरों में, समुद्र के खतरों में, डाकुओं से खतरों में, जंगल और नगरों के खतरों

में□ अपने जातविालों से खतरों में, और अन्□ य जातयिों से खतरों में वह रहा□ इसके अतरिक्□ त क्लीसयिाओं की चनि्□ ताओं से वह ग्रसति रहता था□ इन

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

सबक जो कुप्रभाव शरीर पर पड़ा उसने उसे यह बार

—

बार स्□ मरण दलिाया कि वह मात्र मट्टिी का पात्र है जो कभी भी चकनाचूर

द्वारा लिखित स्□व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

हो सकता है□

किन्□तु इन सारी

पीड़ाओं, सताव और

जोखिमों के बावजूद उस

मिट्टी के पात्र ने यह

अनुभव किया कि उसमें

□क आत्मिक खज़ाना

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

रखा हुआ है इसीलि□ वह हमारे संदर्भति पद में आगे 2कुरन्थियों 4:8 से 9 में कहता है —

“हम चारों ओर से क्□ लेश तो भोगते हैं, पर संक्ट में नहीं पड़ते; नरिूपाय तो हैं पर नराशि नहीं होते, सता□ तो जाते हैं पर त्□ यागे नहीं जाते; गरि□ तो जाते हैं

पर नाश नहीं होते□ ’’

फिर वह 2कुरिन्थियों 6:9 से 10 में कहता है –

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

“अनजानों के सदृश्□ य हैं तौभी प्रसद्धि हैं, मरते हुओं केऐसे हैं और देखो जीवति हैं, मार खाने वालों के

सदृश्□ य हैं परन्□ तु प्राण से मारे नहीं जाते□ शोक करने वाले के समान हैं परन्□ तु सर्वदा आनन्□ द करते हैं, कंगालों के ऐसे

द्वारा लिखित स्□व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

है परन्□ तु बहुतों को धनवान बना देते हैं, ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं□

”

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

2कुरिन्थियों 4:16 से 18 में वह इस मट्टिी केपात्र शरीर केसंबंध में कहता है

—

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

“यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्□ यत्□ व नाश भी होता जाता है तौभी हमारा भीतरी मनुष्□ यत्□ व दनि प्रतदिनि नया

द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

होता जाता है□

क्□योंकि हमारा पल

भर का हल्□का सा

क्□लेश हमारे लि□

बहुत ही

महत्□वपूर्ण और

अनंत महमिा

उत्□ पन्□ न करता

जाता है□ और हम

तो देखी हुई

वस्□ तुओं को नहीं

परन्□ तु अनदेखी

द्वारा लिखित स्□व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

वस्□ तुओं को देखते रहते हैं, क्□ योंकि देखी हुई वस्□ तु□ं थोड़े ही दिन की हैं परन्□ तु अनदेखी वस्□ तु□ं सदा बनी

रहती है□ ” मिट्टी के बरतनों में ऐसी सामर्थ्□य कहां से आ गई जैसी पौलुस के वचनों से

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

अभवि□ यक्□ त होती है ?

यह सामर्थ्□ य मट्टिी की नहीं,

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

मट्टी से नहीं परन्□ तु परमेश्□ वर की ओर से है□ मट्टी को तोड़ा जा सक्ता है

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

परन्□ तु खज़ाना क़ायम रहता है□ परमेश्□ वर की सामर्थ्□ य नरिन्□ तर

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

उपलब्□ ध रहती है□

—

यह सामर्थ्□ य पौलुस के

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

उपलब्□ ध थी जो

व्□ याधि से पीड़ित

था□

—

यह सामर्थ्□ य

द्वारा लिखित स्□व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

डेविड

लिविंग्□ स्□ टन को

भी उपलब्□ ध थी

जिसका □ ककंधा

शेर द्वारा तोड़ा

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

जा चुक था और शरीर अफ्रीक की व्□ याधयिों में नरि्बल हो चुक था□

—यह सामर्थ्य जॉर्ज मेथेसन को भी प्राप्त थी, जो कि अंधा था परन्तु उसने

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

ऐसे गीत लखिे जो आज भी संसार में गा□ जाते है□

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

—ऐसी

सामर्थ्□ य

आपके भी

प्राप्□ त हो

सक्ती है जसिसे

द्वारा लिखित स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

आप स्□ वयं मट्टिी के पात्र होते हु□ भी दूसरों को धनवान और समृद्ध बना

सक्ते हैं और शारीरकि नश्□ वरता के बावजूद अमरता के प्राप्□ त कर,

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:54 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

दूसरों को भी अमरता का संदेश दे सक्ते है□